पाठ - 3

मेरी वसीयत

-जवाहरलाल नेहरू

आइए सीखें - ■देश प्रेम एवं सांस्कृतिक एकता की भावना ■जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व से परिचय। ■विदेशी शब्दों का उच्चारण, लेखन और अर्थ जानना। ■उपसर्गों का प्रयोग।

मुझे मेरे देश की जनता ने, मेरे हिन्दुस्तानी भाइयों और बहनों ने इतना प्रेम और इतनी मुहब्बत दी है कि मैं चाहे जितना कुछ करूँ, वह उसके एक छोटे से हिस्से का भी बदला नहीं हो सकता। सच तो यह है कि प्रेम इतनी कीमती चीज है कि इसके बदले कुछ देना मुमकिन नहीं। इस दुनिया में बहुत से लोग हुए, जिनको अच्छा समझकर, बड़ा मानकर उनका आदर किया गया, पूजा गया, लेकिन भारत के लोगों ने छोटे और बड़े, अमीर और गरीब सब तबकों के बहनों और भाइयों ने मुझे इतना ज्यादा प्यार दिया कि जिसका बयान करना मेरे लिए मुश्किल है और जिससे मैं दब गया। मैं आशा करता हूँ कि मैं अपने जीवन के बाकी बरसों में अपने देशवासियों की सेवा करता रहूँगा और उनके प्रेम के योग्य साबित होऊँगा। बेशुमार दोस्तों और साथियों के मेरे ऊपर और भी ज्यादा एहसान हैं। हम बड़े-बड़े कामों में एक-दूसरे के साथ रहे, मिलजुलकर काम किया। यह तो होता ही है कि जब बड़े काम किए जाते हैं, उनमें कामयाबी भी होती है, नाकामयाबी भी होती है, मगर हम सब शरीक रहें, कामयाबी की खुशी में भी और नाकामयाबी के दुःख में भी।

मैं चाहता हूँ और सच्चे दिल से चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद कोई धार्मिक रस्में अदा न की जाएँ। मैं ऐसी बातों को मानता नहीं हूँ और सिर्फ रस्म समझकर उनमें बँध जाना, धोखे में पड़ना मानता हूँ। मेरी इच्छा है कि जब मैं मर जाऊँ तो मेरा दाह संस्कार कर दिया जाए। अगर विदेश में मरूँ तो मेरे शरीर को वहीं जला दिया जाए और मेरी अस्थियाँ इलाहाबाद भेज दी जाएँ। उनमें से मुट्ठी भर गंगा में डाल दी जाए और उनके बड़े हिस्से के साथ क्या किया जाए, मैं आगे बता रहा हूँ। उनका कुछ भी हिस्सा किसी हालत में बचाकर न रखा जाए।

गंगा में अस्थियों का कुछ हिस्सा डलवाने की इच्छा के पीछे जहाँ तक मेरा ताल्लुक है कोई धार्मिक ख्याल नहीं है। इसके बारे में मेरी कोई धार्मिक भावना नहीं है। मुझे बचपन से गंगा और यमुना से लगाव रहा है और जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, यह लगाव बढ़ता रहा। मैंने मौसमों के बदलने के साथ इनमें बदलते हुए रंग को देखा है और

शिक्षण संकेत - ■पाठ प्रारम्भ करने से पहले नेहरू जी के बारे में बच्चों से चर्चा कीजिए। ■वसीयत की अवधारणा स्पष्ट कीजिए। अनुच्छेद में आए कठिन और विदेशी शब्दों का उच्चारण कराते हुए अर्थ बताइए और लिखवाइए।

कई बार मुझे याद आई उस इतिहास की उन परम्पराओं की, पौराणिक गाथाओं की, उन गीतों और कहानियों की, जो कि कई युगों से उनके साथ जुड़ गई हैं और उनके बहते हुए पानी में घुल-मिल गई हैं।

गंगा तो विशेषकर भारत की नदी है, जनता की प्रिय है, जिससे लिपटी हुई हैं भारत की जातीय स्मृतियाँ, उसकी आशाएँ और उसके भय, उसके विजयगान, उसकी विजय और पराजय। गंगा तो भारत की प्राचीन सभ्यता का प्रतीक रही है, निशानी रही है, सदा बदलती, सदा बहती फिर वही गंगा की गंगा। वह मुझे याद दिलाती है हिमालय की, बर्फ से ढँकी चोटियों की और गहरी घाटियों की, जिनसे मुझे मुहब्बत रही है, उनके नीचे उपजाऊ और दूर-दूर तक फैले मैदानों को, जहाँ काम करते मेरी जिन्दगी गुजरी है, मैंने सुबह की रोशनी में गंगा को मुस्कराते, उछलते-कूदते देखा है और देखा है शाम के साये में उदास काली-सी चादर ओढ़े हुए, भेद-भरी जाड़ों में सिमटी-सी आहिस्ते-आहिस्ते बहती सुन्दर धारा और बरसात में दौड़ती हुई, समुद्र की तरह चौड़ा सीना लिए और सागर को बरबाद करने की शक्ति लिए हुए यही गंगा मेरे लिए निशानी है भारत की प्राचीनता की, यादगार, की जो बहती आई है वर्तमान तक और बहती चली जा रही है, भविष्य के महासागर की ओर।

भले ही मैंने पुरानी रीति और रस्मों को छोड़ दिया हो और मैं चाहता भी हूँ कि हिन्दुस्तान इन सब जंजीरों को तोड़ दे, जिसमें वह जकड़ा है, जो उसको आगे बढ़ने से रोकती हैं और देश में रहने वालों में फूट डालती है, जो बेशुमार लोगों को दबाये रखती हैं और जो शरीर और आत्मा के विकास को रोकती हैं। चाहे यह सब मैं चाहता हूँ, फिर भी मैं यह नहीं चाहता कि मैं अपने को इन पुरानी बातों से बिलकुल अलग कर लूँ। मुझे फख्र है इस शानदार उत्तराधिकार का, इस विरासत का, जो हमारी रही है और हमारी है और मुझे यह भी अच्छी तरह से मालूम है कि मैं भी, हमसबों की तरह, इस जंजीर की एक कड़ी हूँ, जो कि कभी नहीं और कहीं भी नहीं टूटी है और जिसका सिलसिला हिन्दुस्तान के अतीत के इतिहास के प्रारम्भ से चला आता है। यह सिलसिला मैं कभी नहीं तोड़ सकता, क्योंकि मैं उसकी बेहद कद्र करता हूँ और इससे मुझे प्रेरणा, हिम्मत और हौसला मिलता है। मेरी इस आकांक्षा की पुष्टि के लिए और भारत की संस्कृति को श्रद्धांजलि भेंट करने के लिए, मैं यह दरख्वास्त करता हूँ कि मेरी भस्म की एक मुट्ठी इलाहाबाद के पास गंगा में डाल दी जाए, जिससे कि वह उस महासागर में पहुँचे, जो हिन्दुस्तान को घेरे हुए हैं।

मेरी भस्म के बाकी हिस्से को क्या किया जाए? मैं चाहता हूँ कि उसे हवाई जहाज में ऊँचाई पर ले जाकर बिखेर दिया जाए उन खेतों पर, जहाँ भारत के किसान मेहनत करते हैं, ताकि वह भारत की मिट्टी में मिल जाए और उसी का अंग बन जाए।

शिक्षण संकेत - ■गंगा-नदी के उद्‌गम और उसके किनारे बसे नगरों और तीर्थों की संक्षिप्त जानकारी दीजिए। हिमालय के आसपास गंगा की सुन्दरता को रोचकता से समझाइए। ■मानचित्र की सहायता से गंगा का उद्‌गम और उसका मार्ग बताइए।

जवाहर लाल नेहरू

जवाहर लाल नेहरू भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के केवल प्रमुख नायक ही नहीं अपितु आधुनिक युग के निर्माता भी थे। उन्होंने देश के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, राष्ट्रीय एकता, कश्मीर समस्या जैसे विषयों पर चिन्तन को एक नवीन दिशा दी। 'भारत एक खोज' उनकी प्रसिद्ध पुस्तकों में से एक है। 'आखिरी वसीयत' उनके देश प्रेम एवं स्वतन्त्र विचारों का अनुपम उदाहरण है।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

मुमकिन	-	कीमती	-	तबका	-
एहसान	-	शरीक	-	कामयाबी	-
रस्में	-	साबित	-	बेशुमार	-
ताल्लुक	-	ख्याल	-	पौराणिक	-
स्मृतियाँ	-	मुहब्बत	-	आहिस्ता	-
दरख्वास्त	-	कब्र	-	सिलसिला	-
आकांक्षा	-	कद्र	-	विरासत	-

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) नेहरू जी ने अपने दोस्तों और साथियों के लिए क्या बातें कहीं हैं?

(ख) गंगा नदी से नेहरू जी की कौन-कौन सी भावनाएँ लिपटी हुई हैं?

(ग) नेहरू जी ने विभिन्न समय और मौसम पर गंगा का मनोहारी चित्रण किस प्रकार किया है?

(i) सुबह के समय -

(ii) शाम के समय -

(iii) सर्दी के समय -

(घ) नेहरू जी ने अपनी वसीयत में मरने के बाद भस्म को कहाँ-कहाँ डाल देने की इच्छा व्यक्त की है?

शिक्षण संकेत - ■बच्चों से प्रश्न पूछते समय उत्तर देने हेतु उन्हें उत्साहित कीजिए। ■उत्तर न मिलने पर आप बताइए।

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए और लिखिए -

मुहब्बत, बेशुमार, एहसान, शरीक, ताल्लुक, पौराणिक, स्मृतियाँ, फख, उत्तराधिकार, प्रेरणा, दरख्वास्त, पुष्टि, श्रद्धांजलि।

2. कामयाबी शब्द में 'ना' उपसर्ग जोड़कर नाकामयाबी शब्द बना है तथा देश में 'वि' उपसर्ग जोड़कर विदेश शब्द बना है।

इस प्रकार 'ना' और 'वि' उपसर्ग जोड़कर शब्द बनाइए -

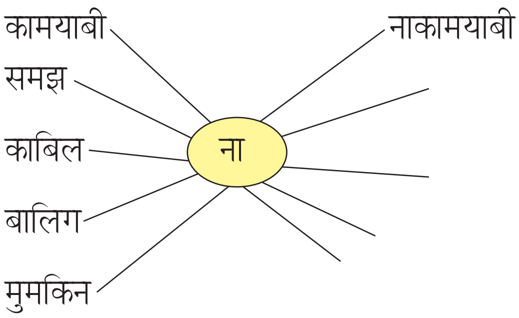

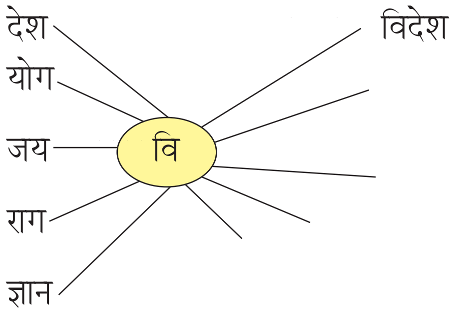

3. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

अस्थियाँ, परम्परा, विजयगान, स्मृतियाँ, प्रेरणा, उत्तराधिकार

4. निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त स्थान पर 'नहीं' और 'न' द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

(क) मैं आज सभा में.................जाऊँगा और..................तुमको जाने दूँगा।

(ख) माँ ने मुझे नाश्ता..................बनाने दिया और................ही खुद बनाया।

(ग) नेहरू जी ने कहा, "मेरे मरने के बाद कोई धार्मिक रस्में अदा................की जाएँ मैं ऐसी बातों को .... मानता।"

(घ) राजू को आज खेलने...............दिया जाए क्योंकि उसने शाला का कार्य पूरा........ किया है।

5. **नीचे दिए उदाहरण के अनुसार वाक्यों को अलग कीजिए -**

दिए गए वाक्य	परिवर्तित वाक्य
1. मैं चाहता भी हूँ कि हिन्दुस्तान इन सब जंजीरों को तोड़ दे।	1. मैं चाहता हूँ 2. हिन्दुस्तान इन सब जंजीरों को तोड़ दे।
2. मुझे यह भी अच्छी तरह मालूम है कि मैं भी इस जंजीर की एक कड़ी हूँ।	1. 2.
3. मैं यह दरख्वास्त करता हूँ कि मेरी भस्म की एक मुट्ठी इलाहाबाद के पास गंगा में डाल दी जाए।	1. 2.
4. मैं चाहता हूँ कि भस्म को हवाई जहाज में ऊँचाई पर ले जाकर बिखेर दिया जाए।	1. 2.

6. **निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति दिए गए विकल्पों में से छाँटकर कीजिए-**

(क) ....प्राचीन सभ्यता का प्रतीक रही है।

(1) यमुना (2) गंगा (3) चम्बल (4) कावेरी

(ख) पुराण में.................प्रत्यय लगाकर पौराणिक शब्द बनता है।

(1) णिक (2) क (3) इक (4) पौ

(ग) 'बेशुमार' शब्द में................उपसर्ग है।

(1) मार (2) बे (3) र (4) बेश

योग्यता विस्तार

1. नेहरू जी का जीवन परिचय लिखिए।
2. महापुरुषों के चित्रों का संकलन कर उनके बारे में पाँच-पाँच वाक्य लिखिए।
3. गंगा तथा देश की अन्य चार बड़ी नदियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर उनके महत्व पर लिखिए?
4. अपने प्रदेश की चार बड़ी नदियों के महत्व पर चार-चार वाक्य लिखिए।
5. गंगा के चार पर्यायवाची शब्द लिखिए।
6. भागीरथ और भागीरथी शब्दों के अर्थ समझाइए।

व्यक्ति की अपेक्षा उनके गुणों की पूजा करो।